संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक-३६ ● ०३ सितम्बर २०१९ भाद्रपद शुक्ल पक्ष पंचमी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १९६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०

प्रस्तुति

श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा ही मनुष्य मनुष्यत्व का अधिकारी बनता है

–डॉ0 धीरज सिंह, सभा प्रधान

वेद कहता है कि तू मनुष्य बन। जब कोई जैसा बन जाता है तो वैसा ही दूसरे को बना सकता है। जलता हुआ दीपक ही बुझे हुए दीपक को जला सकता है। बुझा हुआ दीपक भला बुझे हुए दीपक को क्या जलाएगा? मनुष्य का कर्तव्य है कि स्वयं मनुष्य बने और दूसरों को मनुष्यत्व की प्रेरणा दे। स्वयं अच्छा बने और दूसरों को अच्छा बनाए। यदि मनुष्य स्वयं तो अच्छा बनता है, परन्तु दूसरों को अच्छा नहीं बनाता तो उसकी साधना अधूरी हो जाती है। यदि स्वयं तो अच्छा है, परन्तु अपनी सन्तान को अच्छा नहीं बनाता तो वह अपने लक्ष्य में आधा सफल होता है।

वास्तव में मानव की मानवता ही उसका आभूषण है। वेद, मनुष्य को उपदेश देता है कि तू मनुष्य बन। कोई कहता है मुसलमान बन, कोई कहता है तू ईसाई बन। कोई कहता है तू बौद्ध बन, परन्तु वेद कहता है तू मनुष्य बन। यह और इस जैसी विशेषताएँ वेद के आसन को अन्य धर्मग्रन्थों के आसन से बहुत ऊँचा उठा देती है। वेद का उपदेश संकीर्णता और संकुचितता से परे है। वेद का उपदेश सभी स्थानों, सभी कालों और सभी मनुष्यों पर समान रूप से लागू होता है। जब संसार में यह वेदोपदेश चरितार्थ था तब संसार में मानव वस्तुतः मानव था। मानवता का भेद करने वाले कारण उपस्थित नहीं थे। संसार में जितने जलचर, नभचर और भूचर प्राणी हैं, उनमें से सर्वश्रेष्ठ प्राणी मनुष्य की शरीर, रचना, अन्य प्राणियों से अति श्रेष्ठ है। उसे बुद्धि से विभूषित करके परमात्मा ने चार चाँद लगा दिये।

शतपथ ब्राह्मणकार ने बहुत ही सुन्दर कहा है—

पुरुषो वै प्रजापतेर्नेदिष्ठम्।

अर्थात—प्राणियों में से मनुष्य परमेश्वर के निकटतम है। अन्य कोई प्राणी परमेश्वर की इतनी निकटता को प्राप्त किये हुए नहीं है जितनी कि मनुष्य।

यदि मानव अपनी मानवता को पहचानता रहे तो वह मनुष्य है, अन्यथा उसमें पशुत्व उभरकर उसे पशु बना देता है।

संस्कृत के एक कवि ने कहा है—

खादते मोदते नित्यं शुनकः शूकरः खरः।

तेषामेषां को विशेषो वृत्तिर्येषां तु तादृशी।।

कुत्ते, सूअर और गधे आदि भी खातेहपीते और खेलते-कूदते हैं। यदि मनुष्य भी केवल इन्हीं बातों से अपने जीवन की सार्थकता मानता है तो फिर उसमें और पशु में अन्तर ही क्या है?

कवि तो केवल खाने-पीने और खेलने-कूदने तक ही कहकर रह गया, परन्तु ऐसे भी मनुष्य हैं जिनमें और पशुओं में कोई अन्तर नहीं है। मूर्खता में कई व्यक्ति गधे के समान होते हैं। बस्तियाँ उजाड़ने वाले मनुष्य

उल्लुओं से भी अधिक भयंकर होते हैं। कड़वी और तीखी बातें कहने वाले ततैयों से भी अधिक पीड़क होते हैं। व्यसनी व्यक्ति जो दूसरों को भयंकर व्यसनों का शिकार बना लेते हैं, साँपों और बिच्छुओं से भी अधिक भयंकर होते हैं, क्योंकि उनके व्यसन व्यक्ति को जीवन, पर्यन्त पीड़ित करते रहते हैं। क्रोधी और निर्बलों को दबाने वाले व्यक्ति भेड़िये के समान होते हैं। परस्पर लड़ने वालों में कुत्ते की मनोवृत्ति पाई जाती है। अभिमानी व्यक्तियों में गरुड़ की मनोवृत्ति प्रधान है। लोभी व्यक्ति गीध के समान होते हैं। शब्द-रस में फँसे हुए प्राणी हिरण के समान, स्पर्श-सुख के वशीभूत मनुष्य हाथी के समान, परस के शिकार मनुष्य पतंगे के समान, गन्धरस के शिकार भँवरे के समान, स्वाद के वशीभूत प्राणी मछली के समान होते हैं। कायर व्यक्ति को भेड़ और गीदड़ की उपमा दी जाती है। हरिचुग व्यक्तियों को गिरगिट के तुल्य ठहराया जाता है। ये पशुवृत्तियाँ केवल अपठित और अर्द्धशिक्षित व्यक्तियों में ही नहीं

शेष पृष्ठ ३ पर

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आमंत्रण

वेदों की ओर औटो

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ के 150वें वर्ष के अवसर पर स्वर्ण शताब्दी

वैदिक धर्म महासम्मेलन 11, 12 एवं 13 अक्टूबर, 2019 भाग लेने हेतु

वाराणसी यात्रा

आर्य जन अपने ग्रुप का रेलवे आरक्षण अवश्य करवा लें। आपके आवास की सामान्य व्यवस्था गुरूकुलों, आर्यसमाजों और धर्मशालाओं में निःशुल्क की जाएगी। दिल्ली एवं आस-पास के आर्यजन महासम्मेलन में सम्मिलित होने अथवा अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता-(८०१०२६३६४६), श्री सुखबीर सिंह-(९३५०५०२१७५), श्री शिव कुमार मदान -(९३१०४७४६७६), श्री सुनेहरीलाल यादव -(८३८३०६२५८१), श्री सतीश चड्डा -(९३१३०१३१२३)।

निवेदक : आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

कैसे संस्कार दे रहें हैं हम अपने बच्चों को

इसमें कोई दो राय नहीं कि युग बदल गया है, समय बदल गया है, परन्तु अत्यन्त बेकार या निरर्थक तथा निरूपयोगी संस्कार दे रहें। इन संस्कारों से उनका कोई भला होनें वाला नहीं हैं। अधिकांश घरों में कुछ बुरे संस्कार यों पनप रहे हैं–देर से उठो, चाय पानी पियो। अखबार को सामने रखकर आधा घंटा बैठ जाओ। भले ही इस समय पानी भरने जैसा महत्वपूर्ण काम रह न गया हो या बिगड़ रहा हो या नल व्यर्थ ही बस रहा हो। घर की बातों से उन्हें कोई मतलब नहीं होता। उधर माँ, पत्नी या बहू परेशान हो रही हैं। अकेले उससे काम नहीं सध रहा है या नहीं बन रहा है। पर उन्हें इससे कोई मतलब नहीं होता है। फिर एक नया संस्कार पनपा है। नाश्ता पानी करो और टी.वी. के सामने बैठ जाओ। विशेषकर उन दिनों जब क्रिकेट मैच चल रहा हो। क्रिकेट का खेल देखने की नई संस्कृति और नया संस्कार घरों में चल पड़ा है। किसी समय खेल खेला जाता था, आज खेल केवल देखने की वस्तु हो गयी है। मैं पचासो ऐसे घरों के लोगों को जानता हूँ जो क्रिकेट में आकंठ डूबे रहते हैं। एक नशा–सा हो गया है उन्हें क्रिकेट मैच देखने तथा रन आदि पूछने का, या कौन आउट हो गया? जानने का भले ही वे जीवन में आउट हो रहें हो, उनके बच्चे आउट हो रहें हों इससे उनको कोई मतलब नहीं? मैं ऐसे बच्चों को जानता हूँ जो क्रिकेट के सभी 'एन्स एंड आउट्स' जानते है, लेकिन कभी बैट हाथ में नहीं पकड़ते है। वे खेलने को एक कठोर काम तथा श्रम साध्य मानते है, जिसके कारण वे उसको अपनाते नहीं हैं। कई घरों में बड़े–बूढे तक इन्हें क्रिकेट देखने को प्रेरित करते हैं। आज यह शौक कुंवारियों, बहुओं और माता–पिता तथा शिक्षकों सभी को लग गया है। क्रिकेट का मैच देखने भर से शायद ही हमें कोई अच्छा खिलाड़ी मिले। खिलाड़ी तो वही होगा जिसने मैदान में खेला होगा।

डा० कहते है कि एक घंटे मैच देखने के बदले यदि बच्चा दस–पन्द्रह मिनट खेले तो उसे ज्यादा लाभ होगा। परिश्रम न करने से बड़ों को दिन का दौरा पड़ने की संभावनाएं बढ़ गयी हैं। टी.बी. के के मामले में तो बहुत कुछ देखा जा सकता है। परन्तु देखने में आया है कि –अनेक घरों में बच्चें बिना टी.बी. के नही रहते। वे खेलते है तो टी.बी. देखते हुए, खाते हे तो टी.बी. देखते हुए, पढ़ते है तो टी.बी. देखते हुए। यहाँ तक की बिना टी.बी. के वह सोते नहीं हैं। जैसे पंखा आज १२ महीनों अनिवार्य हो गया है वैसे ही टी.बी. भी १८ घंटे अनिवार्य हो गया है। कुछ लोग दम कदम भी पैदल नहीं चल सकते, वे या तो साइकिल अपनाते या तो मोपेड। दो रूपये का धनिया लेने के लिए स्कूटर से ३ रूपये का पेट्रौल जला देगें, फिर यह खरीदी क्या भाव पड़ी। परोसने के परिश्रम से बचने के कारण बुफेट चल निकला है। उसमें भी कई बार सर्वयान सेवा करने वालों की कमी हो जाती है। श्रम से जी चुराने का परिणाम यह हो रहा है कि आज हमारी सामाजिक व्यवस्थाएँ, अस्त–व्यस्त हो रही हैं। दूसरी ओर शादी विवाहों के खर्च निरंतर बढ़ते जा रहे हैं तथा दूसरों पर आश्रितता बढ़ती जा रही है। ठेके पद्धति को बढ़ावा मिल रहा है। पहले प्रेम और आग्रह से खिलाया जाता था अब तो खुला आह्वान है। गिद्धों जाओ। धक्का–मुक्की करो और खाओ और जितना बिगाड़ना है बिगाड़ो। शादी विवाह में देखिए सब सज–धजकर बैठ जाते है। उसमें श्रम कौन करेगा। हाथ कौन बटायेगा? हम सर्वत्र आराम में ही राम ढूंढ रहे हैं। नई पीढ़ी को हम श्रम में निष्ठा रखने वाली पीढ़ी नहीं कह सकते। विदेशों की हम नकल कर रहे हैं। हम उनके समान रहन–सहन और जीने का तरीका ढूंढ रहे हैं। परन्तु यह नहीं जानते कि वहां के लोग कितना श्रम करते हैं। वे श्रम करके कमाते हैं तब खाते है, हम बिना श्रम करके खाने कमाने में विश्वास करने लगे हैं। आज शादी विवाहों में खूब खर्च करना, अनाप–शनाप शोबाजी करना, दिखावा करना आम बात हो गयी है। बेढ़गे नाच गाने भारतीय संस्कृति के अंग नहीं रहे। महिलाएं अपने समूह में नाचती गाती है, वह बुरा नहीं लगता परन्तु जवान लड़कियों का सड़कों पर नाचना बेहूदा लगता है। आजकल समाज शराब के नशे में डूबने लगा है। विशेषकर नवयुक इसका आदी होता जा रहा है। अगर किसी देश को बिगाड़ना हो तो उसकी नई पीढ़ी को बिगाड़ दो, देश का भविष्य बिगड़ जायेगा। परन्तु किसी को भी इसकी चिन्ता नहीं है।

साथ ही हमारे देश में पशु–पक्षियों के प्रति हिंसा का भाव बढ़ा है। इस देश में आज हिंसा और मांस का व्यापार इतना अधिक बढ़ गया है कि वह चिंता का विषय बनता जा रहा है। दूध देने वाले जानवरों को इंजेक्सन लगाकर अंतिम बूंद तक निचोड़ा जाता है और जब वे इस कारण समय से पूर्व दूध के लिए अनुपयोगी हो जाते है, तब उन्हें कटने के लिए कसाई को बेच दिया जाता है। हमने परिवार के मूलभूत ढांचे को भी बदल डाला है। पता नहीं हम बच्चों के कौन से परिष्कार कर रहे है? जरा सोचें, हम बच्चों को ये कौन से संस्कार दे रहे है? जिससे अंत में हानि होने वाली है।

–सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ दशमसमुल्लासारम्भः

अथाऽऽचाराऽनाचारभक्ष्याऽभक्ष्यविषयान् व्याख्यास्यामः

जैसे अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि–

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।।

जो–जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें और जितने अन्न सड़े, बिगड़े दुर्गन्धादि से दूषित, अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य, मांसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्य, मांस के परमाणुओं ही से पूरित है उनके हाथ का न खावें।

जिसमें उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्त्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें। जैसे किसी गाय से बीस सेर और किसी से दो सेर दूध प्रतिदिन होवे उसका मध्यभाग ग्यारह सेर प्रत्येक गाय से दूध होता है। कोई गाय अठारह और कोई छः महीने दूध देती है, उसका भी मध्य भाग बारह महीन हुए। अब प्रत्येक गाय के जन्म भर के दूध से २४६६० (चौबीस सहस्त्र नौ सौ साठ) मनुष्य एक बार में तृप्त हो सकते हैं। उसके छः बछियां छः बछड़े होते हैं उनमें से दो मर जायें तो भी दश रहे। उनमें से पांच बछड़ियों के जन्म भर के दूध को मिलाकर १२४८०० (एक लाख चौबीस सहस्त्र आठ सौ) मनुष्य तृप्त हो सकते हैं। अब रहे पांच बैल, वे जन्म भर में ५००० (पांच सहस्त्र) मन अन्न न्यून से न्यून उत्पन्न कर सकते हैं। उस अन्न में से प्रत्येक मनुष्य तीन पाव खावे तो अढ़ाई लाख मनुष्यों की तृप्ति होती है। दूध और अन्न मिलाकर ३७४८०० (तीन लाख चौहत्तर हजार आठ सौ) मनुष्य तृप्त होते हैं। दोनों संख्या मिला के एक गाय की एक पीढ़ी में ४७५६०० (चार लाख पचहत्तर सहस्त्र छः सौ) मनुष्य एक बार पालित होते हैं और पीढ़ी परपीढ़ी बढ़ाकर लेखा करें तो असंख्यात मनुष्यों का पालन होता है इससे भिन्न बैलगाड़ी सवारी भार उठाने आदि कर्मों से मनुष्यों के बड़े उपकारक होते हैं तथा गाय दूध में अधिक उपकारक होती है परन्तु जैसे बैल उपकारक होते हैं वैसे भैंसे भी हैं। परन्तु गाय के दूध घी से जितने बुद्धिवृद्धि से लाभ होते हैं उतने भैंस के दूध से नहीं। इससे मुख्योपकारक आर्यों ने गाय को गिना है। और जो कोई अन्य विद्वान् होगा वह भी इसी प्रकार समझेगा।

बकरी के दूध से २५१२० (पच्चीस सहस्त्र नौ सौ बीस) आदमियों का पालन होता है वैसे हाथी, घोड़े, ऊंट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का रज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे। क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल प्राप्ति होते थे। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। क्योंकि– नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।

जब वृक्ष का मूल ही काट दिया जाय तो फूल कहां से हों?

प्रश्न– जो सभी अहिंसक हो जायें तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जायें कि सब गाय आदि पशुओं को मार खायें तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ जाय?

उत्तर– यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु व मनुष्य हों उन्हें दण्ड देवें और प्राण भी वियुक्त कर दें।

प्रश्न–फिर क्या उनका मांस फेंक दें।

उत्तर चाहें फेंक दें, चाहें कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला देवें वा जला देवें अथवा कोई मांसाहारी खावे तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है।

जितना हिंसा और चोरी विश्वासघात, छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश बुद्धिबलपराक्रमवृद्धि और आयुवृद्धि होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाक मेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपनी प्रकृति से विरुद्ध विकार करने वाले हैं जिस–जिस के लिये जो–जो पदार्थ वैद्यकशास्त्र में वर्जित किये हैं, उन–उन को सर्वथा त्याग करना और जो–जो जिसके लिये विहित हैं उन–उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

प्रश्न– एक साथ खाने में कुछ दोष है वा नहीं?

उत्तर– दोष है। क्योंकि एक के साथ दूसरे का स्वभाव और प्रकृति नहीं मिलती। जैसे कुष्ठी आदि के साथ खाने से अच्छे मनुष्य का भी रुधिर बिगड़ जाता है वैसे दूसरे के साथ खाने में भी कछ बिगाड़ ही होता है, सुधार नहीं। इसीलिये–

नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।

न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद् ब्रजेत्।। मनु०।।

न किसी को अपना झूंठा पदार्थ दे और न किसी के भोजन के बीच आप खावे। न अधिक भोजन करें और न भोजन किये पश्चात् हाथ मुख धोये बिना कहीं इधर–उधर जाय।

क्रमशः

धरोहर वीर सावरकर

❑ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी
मंत्री – आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

दिल्ली यूनिवर्सिटी में हाल में स्थापित किये गए वीर सावरकर की मूर्ति पर कुछ असामाजिक तत्वों ने जूतों की माला पहनाकर काला रंग पोत दिया। जिन्होंने भी यह कार्य किया उन्होंने न केवल अपरिपक्वता का परिचय दिया अपितु सामान्य शिष्टाचार का भी पालन नहीं किया। कमाल देखिये ये लोग भगत सिंह जिंदाबाद के नारे लगा रहे थे। इन मूर्खों को यह भी नहीं मालूम कि भगत सिंह ने वीर सावरकर रचित प्रतिबंधित पुस्तक 1857 का स्वातंत्र्य समर को छपवाकर वितरित किया था। भगत सिंह के मन में सावरकर के लिए श्रद्धाभाव था। हमारे देश में एक विशेष जमात यह राग अलाप रही है कि वीर सावरकर गद्दार थे क्यूंकि उन्होंने अंग्रेजों से माफी मांगी थी। सावरकर की आलोचना करने से पहले वीर सावरकर को जान तो लीजिये।

वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी देशभक्त थे जिन्होंने 1901 में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु पर नासिक में शोक सभा का विरोध किया और कहा कि वो हमारे शत्रु देश की रानी थी, हम शोक क्यूँ करें? क्या किसी भारतीय महापुरुष के निधन पर ब्रिटेन में शोक सभा हुई है.?

वीर सावरकर पहले देशभक्त थे जिन्होंने एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह का उत्सव मनाने वालों को त्र्यम्बकेश्वर में बड़े बड़े पोस्टर लगाकर कहा था कि गुलामी का उत्सव मत मनाओ...

विदेशी वस्त्रों की पहली होली पूना में 7 अक्तूबर 1905 को वीर सावरकर ने जलाई थी...

वीर सावरकर पहले ऐसे क्रांतिकारी थे जिन्होंने विदेशी वस्त्रों का दहन किया, तब बाल गंगाधर तिलक ने अपने पत्र केसरी में उनको शिवाजी के समान बताकर उनकी प्रशंसा की थी जबकि इस घटना की दक्षिण अफ्रीका के अपने पत्र इन्डियन ओपीनियन में गाँधी ने निंदा की थी...

सावरकर द्वारा विदेशी वस्त्र दहन की इस प्रथम घटना के 16 वर्ष बाद गाँधी उनके मार्ग पर चले और 11 जुलाई 1921 को मुंबई के परेल में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया...

सावरकर पहले भारतीय थे जिनको 1905 में विदेशी वस्त्र दहन के कारण पुणे के फर्म्युसन कॉलेज से निकाल दिया गया और दस रूपये जुर्माना लगाया ... इसके विरोध में हड़ताल हुई... स्वयं तिलक जी ने केसरी पत्र में सावरकर के पक्ष में सम्पादकीय लिखा...

वीर सावरकर ऐसे पहले बैरिस्टर थे जिन्होंने 1909 में ब्रिटेन में ग्रेज-इन परीक्षा पास करने के बाद ब्रिटेन के राजा के प्रति वफादार होने की शपथ नही ली इस कारण उन्हें बैरिस्टर होने की उपाधि का पत्र कभी नही दिया गया...

वीर सावरकर पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा गदर कहे जाने वाले संघर्ष को 1857 का स्वतन्त्र समर नामक ग्रन्थ लिखकर सिद्ध कर दिया..

सावरकर पहले ऐसे क्रांतिकारी लेखक थे जिनके लिखे 1857 का स्वतन्त्र समर पुस्तक पर ब्रिटिश संसद ने प्रकाशित होने से पहले प्रतिबन्ध लगाया था...

1857 का स्वातंत्र्य समरश विदेशों में छापा गया और भारत में भगत सिंहने इसे छपवाया था जिसकी एक एक प्रति तीन-तीन सौ रूपये में बिकी थी... भारतीय क्रांतिकारियों के लिए यह पवित्र गीता थी... पुलिस छापों में देशभक्तों के घरों में यही पुस्तक मिलती थी...

वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जो समुद्री जहाज में बंदी बनाकर ब्रिटेन से भारत लाते समय आठ जुलाई 1910 को समुद्र में कूद पड़े थे और तैरकर फ्रांस पहुँच गए थे...

सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जिनका मुकद्दमा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में चला, मगर ब्रिटेन और फ्रांस की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नहीं मिला और बंदीबनाकर भारत लाया गया...

वीर सावरकर विश्व के पहले क्रांतिकारी और भारत के पहले राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने दो आजन्म कारावास की सजा सुनाई थी...

सावरकर पहले ऐसे देशभक्त थे जो दो जन्म कारावास की सजा सुनते ही हंसकर बोले- चलो, ईसाई सत्ता ने हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म सिद्धांत को मान लिया।

वीर सावरकर पहले राजनैतिक बंदी थे जिन्होंने काला पानी की सजा के समय 10 साल से भी अधिक समय तक आजादी के लिए कोल्हू चलाकर 30 पौंड तेल प्रतिदिन निकाला...

वीर सावरकर काला पानी में पहले ऐसे कैदी थे जिन्होंने काल कोठरी की दीवारों पर कंकड़ और कोयले से कवितायें लिखी और 6000 पंक्तियाँ याद रखी...

वीर सावरकर पहले देशभक्त लेखक थे, जिनकी लिखी हुई पुस्तकों पर आजादी के बाद कई वर्षों तक प्रतिबन्ध लगा रहा...

आधुनिक इतिहास के वीर सावरकर पहले विद्वान लेखक थे जिन्होंने हिन्दू को परिभाषित करते हुए लिखा कि-हिन्दुरितीस्मृतः यस्य भारत भूमिका. पितृभू पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितीस्मृतः अर्थात समुद्र से हिमालय तक भारत भूमि जिसकी पितृभू है जिसके पूर्वज यहीं पैदा हुए हैं व यही पुण्य भू है, जिसके तीर्थ भारत भूमि में ही हैं, वही हिन्दू है...

वीर सावरकर प्रथम राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सत्ता ने 30 वर्षों तक जेलों में रखा तथा आजादी के बाद 1948 में नेहरु सरकार ने गाँधी हत्या की आड़ में लाल किले में बंद रखा पर न्यायालय द्वारा आरोप झूठे पाए जाने के बाद ससम्मान रिहा कर दिया... देशी-विदेशी दोनों सरकारों को उनके राष्ट्रवादी विचारोंसे डर लगता था।

वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी थे जब उनका 26 फरवरी 1966 को उनका स्वर्गारोहण हुआ तब भारतीय संसद में कुछ सांसदों ने शोक प्रस्ताव रखा तो यह कहकर रोक दिया गया कि वे संसद सदस्य नही थे जबकि चर्चिल की मौत पर शोक मनाया गया था...

वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त स्वतन्त्र वीर थे जिनके मरणोपरांत 26 फरवरी 2003 को उसी संसद में मूर्ति लगी जिसमे कभी उनके निधनपर शोक प्रस्ताव भी रोका गया था....

वीर सावरकर ऐसे पहले राष्ट्रवादी विचारक थे जिनके चित्र को संसद भवन में लगाने से रोकने के लिए कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गाँधी ने राष्ट्रपति को पत्र लिखा लेकिन राष्ट्रपति डॉ० अब्दुल कलाम ने सुझाव पत्र नकार दिया और वीर सावरकर के चित्र अनावरण राष्ट्रपति ने अपने कर-कमलों से किया...

वीर सावरकर पहले ऐसे राष्ट्रभक्त हुए जिनके शिलालेख को अंडमान द्वीप की सेल्युलर जेल के कीर्ति स्तम्भ से UPA सरकार के मंत्री मणिशंकर अय्यर ने हटवा दिया था और उसकी जगह गांधी का शिलालेख लगवा दिया। वीर सावरकर ने दस साल आजादी के लिए काला पानी में कोल्हू चलाया था जबकि गाँधी ने कालापानी की उस जेल में कभी दस मिनट चरखा नही चलाया।

महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी-देशभक्त, उच्च कोटि के साहित्य के रचनाकार, हिंदी-हिन्दू-हिन्दुस्थान के मंत्रदाता, हिंदुत्व के सूत्रधार वीर विनायक दामोदर सावरकर पहले ऐसे भव्य-दिव्य पुरुष, भारत माता के सच्चे सपूत थे, जिनसे अन्ग्रेजी सत्ता भयभीत थी, आजादी के बाद नेहरु की कांग्रेस सरकार भयभीत थी...

वीर सावरकर माँ भारती के पहले सपूत थे जिन्हें जीते जी और मरने के बाद भी आगे बढ़ने से रोका गया.. . पर आश्चर्य की बात यह है कि इन सभी विरोधियों के घोर अँधेरे को चीरकर आज वीर सावरकर के राष्ट्रवादी विचारों का सूर्य उदय हो रहा है.. वीर सावरकर के जैसे कर्म नहीं कर सकते तो कम से कम उनका सम्मान तो कर ही सकते हो। ।।वन्देमातरम।।

पृष्ठ १ का शेष

पायी जातीं, अपितु पढ़े-लिखे और शिक्षित-प्रशिक्षित भी इनका शिकार हैं। बी० ए०, एम० ए० भी ईर्ष्या और द्वेष की दलदल में फँसे हुए हैं। शास्त्री और आचार्य भी संकीर्णता और संकुचितता के रोगों से ग्रसित हैं। पढ़े-लिखे भी दूसरों को धोखा देते हैं। वे भी छल-कपट करते हुए झिझकते नहीं हैं। शिक्षा भूषण के स्थान पर दूषण *बन गई है। मनुष्य, शिक्षा प्राप्त करने से ही मनुष्य* बन जाए, यह कोई आवश्यक नहीं है। मनुष्यत्व तो एक साधना है। यह कुछ वर्षों की साधना नहीं, अपितु जीवनभर की साधना है। मनुष्यत्व की प्राप्ति के लिए मनुष्य को जागरुक रहना पड़ता है, आत्मनिरीक्षण करना पड़ता है। तभी मनुष्य मनुष्यत्व का अधिकारी बनता है। ऊँचे मनुष्यों का संसार में मिलना बहुत कठिन है.

ईश्वर तो मिलता है इंसान ही नहीं मिलता,
ये चीज वह है कि देखी कहीं कहीं मैंने।

रुसो ने कहा है—"हमारा मनुष्य बनना हमारी सबसे पहली पढ़ाई है।"

मुंशी प्रेमचन्द के शब्दों में,"मनुष्य बहुत होते हों, पर मनुष्यता विरले में ही होती है।"

फेर कभी

—हितेश कुमार शर्मा

जनता की आवाज सुनें अब सिंहासन आसीन सभी।
यही समय है धर्म कर्म का उचित कर्म हो आज अभी।
हिन्दी राज्य राष्ट्र भाषा हो किंचित भी हो देर नहीं।
काश्मीर से तीन सौ सत्तर हटे तुरन्त अबेर नहीं।
यही समय है कुछ करने का समय लौटता कभी नहीं।
गद्दारों से शून्य देश हो आतंकी मारे जाये।
नक्सलवादी मुख्य धारा में मिले या संहारे जाये।
क्षमा शब्द आदर्शवाद की बात करेंगे फेर कभी।
बहुत सह लिया बहुत ढो लिये नखरे हमने कश्मीरी।
बंगाली दीदी की झेली जुबां जहर की नश्तीरी।
उसकी बात सुनो मत जिसने बात उचित की नहीं कभी।
याद रहे कर्तव्य परायण थे तुम इसीलिए जीते।
जो कर्तव्य विमुख थे हारे दोनों हाथ रहे रीते।
जनगणमन के साथ नहाओं श्री गंगा जय की परभी।
जिता दिया तुमको जनता ने पुरुस्कार हो जन–जन को।
रहे अधूर काम अभी जो पूर्ण करो मितवा उनको।
बहुत जरूरी है जनता की मन की बातें सुनना भी।

12 सितम्बर - प्रथम पुण्यतिथि पर विशेष-

आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान एवं सिद्धहस्त लेखक भवानी लाल भारतीय

-महेश चन्द्र माथुर
सेवानिवृत्त पुस्तकालयाध्यक्ष
डी-2, मॉडल टाउन, भट्टी की बावड़ी, जोधपुर
मो0 9413458919

"आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान एवं सिद्धहस्त लेखक भवानी लाल भारतीय अमर शहीद पं. लेखराम जी की यह अंतिम इच्छा थी कि आर्य समाज से तहरीर का कार्य बंद न हो।" पं० लेखराम जी के इसी कथन को साकार रूप प्रदान किया आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान भवानीलाल जी भारतीय ने। यह सौभाग्य और संयोग की बात है कि भारतीय जी का जन्म ऋषि दयानन्द सरस्वती के प्रधान कार्यक्षेत्र राजस्थान में हुआ। नागौर जिले के परबतसर गांव में एडवोकेट फकीर चंद जी के यहाँ ६ जून १६२४ को आपका जन्म हुआ।

आपने संस्कृत और हिन्दी में एम.ए. किया। "आर्य समाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान" पर आपके महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य पर राजस्थान विश्वविद्यालय ने आपको पी.एच. डी. की उपाधि प्रदान की। युवावस्था से ही आपकी कलम ने धर्म, संस्कृति एवं ऋषिदयानन्द के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं रच डाली, तब से साहित्य सृजन का कार्य जीवनपर्यन्त चलता रहा। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वेद, उपनिषद् पुराण और इतिहास की मौलिक विवेचना और चिन्तन आपकी लेखन प्रतिमा की विशेषता रही है।

आमजन में जब वेद और उपनिषद् की चर्चा चलती है तो वे सोचते है। वेद, उपनिषदों की बातें कहां हमारे समझ में आएगी। ऐसा सोचक आर्य अर्थात् हिन्दू धर्मावलम्बी इसमें रूची नहीं लेते हैं। भारतीय जी ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, अर्थवेद एवं सामवेद में से सौ-सौ मंत्रों की धारावाही सरस भावपूर्ण, व्याख्या की है जिससे सरल भाषा में आमजन वेदों को समझ सके। वेदों के बाद प्रमाणिक माने जाने वाले ग्रंथों में उपनिषद शीर्षस्थ हैं। आध्यात्म जैसे गूढ़ विषय को स्पष्ट एवं सरल भाषा में उपनिषदों की कथाओं को कलमबद्ध करके हर भारतीय नागरिक में वेद और उपनिषदों में रूचि करने का प्रयास किया। इससे बड़ी धर्म की क्या सेवा हो सकती है।

पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपके निर्देशन में २०-२५ शोध छात्रों ने अपना शोधकार्य पूरा कर पी.एच.डी. की उपाधि ली। ऋषि दयानन्द के जीवन के बारे में भारतीय जी का गूढ़ ज्ञान देखकर अनेक लोग ताज्जुब करते थे। ऋषि दयानन्द एवं उनके जीवन के बारे में जो व्यक्ति शोध अथवा लेखन कार्य करता उसके लिए भारतीय जी से मिलकर परामर्श लेना आवश्यम्भावी हो जाता। आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में एशियन अध्ययन के अध्यक्ष डॉ. जे.टी.एफ. जार्डन्स, अमेरिका के शिकांगो वि.वि. के शोधार्थी जेकल्युवेलिन आदि विदेशी विद्वानों ने अपने-अपने कार्यों में भारतीय जी का मार्गदर्शन लिया।

नव जागरण के पुरोधा शीर्षक से भारतीय जी ने ऋषि दयानन्द का प्रमाणिक जीवन चरित लिख। इसके दूसरे संस्करण में जीवन चरित को दो भागों में प्रकाशित किया गया है। इस जीवन चरित में घटनाएं तथ्यपरक, इतिहास सम्मत एवं प्रमाण पुष्ट है। इस अभरकृति से पाठकगण भारतीय जी को हमेशा याद रखेगा।

इसके अतिरिक्त भारतीय जी ने कृष्णचरित पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने कृष्ण का मानवीय रूप ही स्वीकार कर उन्हें वेदों और उपनिषदों में पारंगत बताया है। भारतीय जी ने लिखा कि राधा का कृष्ण के जीवन से कोई संबंध नहीं था। राधा का जिक्र महाभारत तो क्या भागवत में भी नहीं है। कृष्ण के साथ राधा का नाम लेने वालों के लिए यह पुस्तक उनकी आंखे खोल देने में सक्षम है। भारतीय जी की लेखनी से अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी गई हैं। जो समस्त आर्य जगत के लिए अनमोल विरासत हैं। इन पुस्तकों में आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्य समाज का इतिहास (साहित्य), महर्षि के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी, आर्य लेखक कोष, स्वामी श्रद्धानन्द ग्रंथावली (नौ खण्डों में) सम्पादन, पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा, चतुर्वेद अध्यात्मक शतक, महर्षि दयानन्द और विवेकानन्द आदि अनेक ग्रंथ है जो आर्य समाज का गौरव बढ़ाता है।

भारतीय जी जितने कुशल लेखक थे, साथ ही वे मंझे हुए वक्ता भी थे। देश-विदेश में भ्रमण कर ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के बारे में अपने विचार और अपनी ओजस्वी वाणी एवं धाराप्रवाह बौद्धिक से श्रोताओं पर एक गहरी छाप छोड़ते थे।

भारती जी की एक विशेषता थी कि वे अपने पास आए हुए हर पत्र, पोस्टकार्ड का जवाब अवश्य देते थे। इनमें अधिकांश पत्र धर्म एवं संस्कृति संबंधी शंका समाधान को लेकर होते थे। वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के विरूद्ध भ्रांतियों के पक्ष में बाते कई बार अन्य पत्र पत्रिकाओं में छपने पर पाठक गण तुरन्त प्रहार कर देने का अनुरोध करते थे।

भारतीय जी निःसंदेह एक सुयोग्य लेखक अनुसंधानकर्त्ता, विशाल ग्रंथ संग्रहकर्त्ता और साहित्य साधना में तपे हुए स्वर्ण थे। उनकी लेखन शैली सरल प्रेरक और मौलिक है। आप प्रखर वक्ता थे, उनक वाणी में कटुता नहीं माधुर्यता थी। किसी विषय पर पक्ष या विपक्ष में उनसे अपनी प्रतिक्रिया लेने पर वे तुरंत देने में समर्थ थे। या यूं कहें कि वे चलते-फिरते विश्वकोष थे। भारतीय जी ने जीवन भर लेखन में लगभग दो सौ ग्रंथों की रचना की एवं हजारों लेख पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे। आपने उच्चाकोटि का साहित्य सृजन कर आर्य समाज की जो सेवा की है। वह स्वर्ण अक्षरो में लिखने योग्य है।

सावधान-बच्चों को मोबाइल देना एक ग्राम कोकेन देने के बराबर

प्रस्तुति : हरीश कुमार शास्त्री

- जो छोटे बच्चे मोबाइल से खेलते हैं, वो देर से बोलना शुरू करते हैं। *— टाइम मैगजीन में प्रकाशित रिपोर्ट*
- लंबे समय तक मोबाइल का इस्तेमाल ब्रेन ट्यूमर का खतरा। *— एम्स की स्टडी*
- मोबाइल बच्चों में ड्राई आइज की बड़ी वजह। *— द.कोरियाई वैज्ञानिक*

अगर आप अपने बच्चे को मोबाइल या टैबलेट दे रहे हैं। या आप उनके सामने लगातार मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं तो आपको इससे जुड़े खतरे भी पता होने चाहिए। क्या आपको पता है दुनिया के सबसे अमीर शख्सियतों में शुमार बिलगेट्स ने अपने बच्चों को 14 साल की उम्र तक मोबाइल नहीं दिया था। इसी तरह स्टीव जॉब्स ने 2011 में न्यूयॉर्क टाइम्स को दिए इंटरव्यू में बताया था कि उन्होंने अपने बच्चों को कभी भी आईपैड इस्तेमाल नहीं करने दिया था। ये दो उदाहरण सिर्फ इसलिए हैं ताकि आप यह जान सकें कि मोबाइल के इस्तेमाल को लेकर भी कई रिसर्च हुईं हैं जिनके परिणाम चौंकाने वाले हैं जो बच्चें स्मार्टफोट किसी भी रूप में इस्तेमाल करते हैं (वीडियो देखने-गाना सुनने। वे अन्य बच्चों की तुलना में देर से बोलना शुरू करते हैं। छह माह से दो साल तक 900 बच्चों पर किए गए सर्वे में यह चौंकाने वाली स्थिति सामने आई है। हर 30 मिनट के स्क्रीन टाइम (मोबाइल इस्तेमाल) से ही 49प्रतिशत आसार बढ़ जाते हैं कि बच्चा देरी से बोलना शुरू करेगा। वहीं दुनिया की जानी-मानी एडिक्शन थैरेपिस्ट मैंडी सालगिरी ने तो यहां तक कहा है कि बच्चों को स्मार्टफोट देना उन्हें एक ग्राम कोकेन देने के बराबर है।

समाधान आप ही हैं....

मोबाइल हमारे घरों की दीवार बन रहा है। यह बच्चों को अपने ही दायरे में कैद करता जा रहा है। अगर आप चाहते है कि आपके बच्चे खुलकर खिलें तो उन्हें कोई कृत्रिम खुशी के बजाय अपना वक्त दें। मोबाइल को नियंत्रित करिए बच्चों को इससे आज़ाद।

महर्षि दयानन्द का एक महत्त्वपूर्ण लघु ग्रन्थ 'गोकरुणानिधि'

लेखक– डॉ० रामनाथ वेदालंकार
प्रस्तुति– प्रियांशु सेठ

महर्षि दयानन्द रचित पुस्तकों में एक छोटी से पुस्तक 'गोकरुणानिधि' है। देखने में तो छोटी सी है, किन्तु महत्त्व में यह कम नहीं है। इसकी रचना स्वामी जी ने आगरा में की थी। पुस्तक के अन्त में स्वामी जी ने स्वयं लिखा है कि यह ग्रन्थ संवत् १६३७ फाल्गुन कृष्णपक्ष दशमी गुरुवार के दिन बन कर पूर्ण हुआ। यह १५ दिन में ही छप कर तैयार हो गया और शीघ्र ही बिक कर समाप्त हो गया। एक वर्ष के अन्दर ही इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। स्वामी जी ने इसका अंग्रेजी अनुवाद भी करवाया था। गोकरुणानिधि तीन भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में गाय आदि पशुओं की रक्षा के विषय में समीक्षा लिखी गयी है। यह समीक्षा भी दो प्रकरणों में है। प्रथम प्ररण में गाय आदि पशुओं की रक्षा का महत्त्व बताया गया है। दूसरे प्रकरण में हिंसक और रक्षक का संवाद है, जिसमें मांसभक्षण के पक्ष में जो भी बातें कहीं जा सकती हैं, वे सब एक–एक करके हिंसक के मुख से कहला कर रक्षक द्वारा उन सबका उत्तर दिलाया गया है। इससे अन्त में यह परिणाम निकलता है कि मांसभक्षण सर्वथा अनुचित है। यह संवाद बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है। शिक्षणालयों में एक छात्र को हिंसक तथा दूसरे को रक्षक बना कर इसका अभिनय किया जा सकता है। हिंसक और रक्षक के संवाद के बाद मद्यपान तथा भांग आदि के सेवन के दोष बताये गये हैं, क्योंकि मांसभक्षण से मद्यपान तथा भांग आदि नशीले पदार्थों के सेवन की आदत भी पड़ जाती है। पुस्तक के दूसरे भाग में गोकृष्यादिरक्षिणी सभाओं के नियम लिखे हैं तथा तीसरे भाग में उपनियम हैं।

भूमिका में ग्रन्थ का प्रयोजन बताते हुए महर्षि लिखते हैं– ''यह ग्रन्थ इसी अभिप्राय से रचा गया है, जिससे गौ आदि पशु जहां तक सामर्थ हो बचायें जावें और उनके बचाने से दूध, घी और खेती के बढ़ने से सबको सुख बढ़ता है।'' गाय आदि पशुओं की रक्षा क्यों आवश्यक है यह समझाने के लिए महर्षि हिसाब लगाकर बताते हैं कि एक गाय की पीढ़ी रक्षा करने पर कितना लाभ पहुंचा सकती है, जबकि उसे काट कर उसका मांस खाने से उसकी तुलना में कुछ भी उपकार नहीं होता। वे लिखते हैं– ''जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो और दूसरी बीस सेर, तो (औसत से) प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक मास में सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम ६ महीने और दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है तो दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं। इस हिसाब से १२ महीनों का दूध ६६ मन होता है।''

''इतने दूध को औटाकर प्रति सेर में छटांक चावल और डेढ़ छटांक चीनी डाल कर खीर बना खावे, तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है, क्योंकि यह भी एक मध्यमान की गिनती है, अर्थात् कोई दो सेर दूध की खीर से अधिक खाएगा और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से एक हजार नौ सौ अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं। गाय न्यून से न्यून ८ और अधिक से अधिक १८ बार प्रजनन करती है, इसका मध्यभाग १३ आया। तो पच्चीस हजार सात सौ चालीस मनुष्य एक गाय के जन्मभर के दूध मात्र से एक बार तृप्त हो सकते हैं।'' ''इस गाय की एक पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए। इनमें से एक की मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है, तो भी बारह रहे। उन छः बछियाओं के दूध मात्र से उक्त प्रकार एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल। उनमें एक जोड़ी से दोनों साख में दो सौ मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती हैं। और उनके कार्य का मध्यभाग आठ वर्ष है। इस हिसाब से चार हजार आठ सौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीनों जोड़ी की है।'' ४८०० मन अन्न से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिने, तो दो लाख छप्पन हजार मनुष्यों का एक बार भोजन होता है। दूध और अन्न को मिला कर देखने से निश्चय है कि चार लाख दस हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। अब छः गाय की पीढ़ी पर–पीढ़ियों के हिसाब लगा कर देखा जावे तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल ८० मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं। देखो, तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?''

इस प्रकार बकरी के लिए भी हिसाब लगा कर दिखाया है परन्तु महर्षि केवल गाय और बकरियों की ही रक्षार्थ सचेष्ट नहीं थे, प्रत्युत सभी उपयोगी पशुओं की रक्षा आवश्यक समझते थे, और किसी भी पशु का मांस खाने के सर्वथा विरुद्ध थे। गाय आदि पशुओं की रक्षा के लिए महर्षि दयानन्द की आतुरता उनकी निम्नलिखित पंक्तियों से प्रकट हो रही है– ''गौआदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का ही नाश होता है क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु सात सौ वर्ष पूर्व मिलते थे, उतना घी दूध और बैल आदि पशु इस समय दशगुणे मूल्य से भी नहीं मिल सकते।'' ''हे मांसाहारियों! तुम लोगों को जब कुछ काल पश्चात् पशु न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं? हे परमेश्वर तू क्यों इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इसके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है?'' दयामय दयानन्द ने गाय आदि पशुओं की हत्या रुकवाने के लिए देशव्यापी हस्ताक्षर–अभियान चलाया था। उनका प्रयत्न था कि गौ हत्या रोकने विषयक प्रार्थनापत्र पर दो करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर करवा कर ब्रिटिशसम्राज्ञी विक्टोरिया को वह प्रार्थनापत्र भेजा जाए। इसके लिए उन्होंने राजा से रंक तक सभी को प्रेरित किया था। इस प्रार्थनापत्र पर उदयपुर के महाराजा श्री सज्जन सिंह, जोधपुर के महाराजा यशबन्तसिंह, शाहपुराधीश, नाहरसिंह, महाराजा बूंदी आदि ने भी हस्ताक्षर किये थे तथा अपनी प्रजा से भी कराये थे। महर्षि के असामयिक देहावसान के कारण यह कार्य बीच में ही रुक गया। स्वामी दयानन्द गोकृष्यादिरक्षिणी सभा की स्थापना करना चाहते थे। इसे वे विश्वव्यापी बनाना चाहते थे। सब विश्व को विविध सुख पहुंचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य नियमों में वर्णित किया गया है तथा लिखा है कि जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन–मन–धन से प्रयास और सहायता करेगा, वह इस सभा के प्रतिष्ठायोग्य होगा। यह भी लिखा है कि क्योंकि यह कार्य सर्वहितकारी है, इसलिए यह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है। जो सभा देशदेशान्तर और द्वीप–द्वीपान्तर में परोपकार ही करना अभीष्ट रखती है, वह सभा की सहकारिणी समझी जायेगी। महर्षि के १२ जनवरी सन्१८८२ ई० के पत्र से ज्ञात होता है कि उन्होंने आगरा में एक ''गो–रक्षिणी सभा'' स्थापित की थी और उसके नियमोपनियम भी बनाये थे। सम्भवतः वे ही नियमोपनियम गोकरुणानिधि में उन्होंने छपवाये होंगे। गोकृष्यादिरक्षिणी सभा के नियमों में लिखा है कि जो सभा के उद्देश्य के अनुकूल आचरण करने को उद्यत हो तथा जिसकी आयु १८ वर्ष से न्यून न हो वह इस सभा में प्रविष्ट हो सकता है। जो इस सभा में सदाचारपूर्वक एक वर्ष रह चुका हो और अपनी आय का शतांश या अधिक देता रहा हो, वह 'गौ रक्षक सभासद्' हो जायेगा और उसे सम्मति देने का अधिकार प्राप्त हो जायेगा। वर्ष भर सभा में रहने के नियम को विशेष परिस्थितियों में अन्तरंग सभा शिथिल भी कर सकती है। राजा, सरदार, बड़े–बड़े साहूकार आदि को सभा के सभासद् बनने के लिए शतांश देना आवश्यक नहीं होगा। वे एक बार या मासिक या वार्षिक अपने उत्साह या सामर्थ्य के अनुसार देकर सभासद् बन सकते हैं। अन्तरंग सभा किसी विशेष हेतु से चन्दा न देने वाले को भी गौ रक्षक सभासद् बना सकती है। उपनियमों में अंकित है कि सभा के समस्त कार्यप्रबन्ध के लिए एक अन्तरंग सभा नियत की जायेगी और उसके तीन प्रकार के सभासद होंगे एक प्रतिनिधि दूसरे प्रतिष्ठित और तीसरे अधिकारी। प्रत्येक दो सप्ताह बाद अन्तरंग सभा अवश्य हुआ करेगी और मन्त्री तथा प्रधान भी आज्ञा से या जब अन्तरंग सभा के पांच सदस्य मन्त्री को पत्र लिखें तब भी हो सकती है। गोकृष्यादिरक्षिणी सभा का कार्य क्या होगा एतदर्थ लिखा है कि संप्रति इस सभा के धन का व्यय गौ आदि पशु लेने, उनका पालन करने, जंगल और घास के क्रय करने, उनकी रक्षा के लिए भृत्य वह अधिकारी रखने, तालाब, कूप, बावड़ी अथवा बाड़ा बनाने के निमित्त किया जायेगा। पुनः अत्युन्नत होने पर सर्वहित कार्य में भी व्यय किया जा सकेगा। यह भी निर्देश है कि इस सभा के जो पशु प्रसूत होंगे, उनका दूध एक मास तक उनके बछड़े को पिलाना चाहिए और अधिक होने पर उसी पशु को अन्न के साथ खिला देना चाहिए। दूसरे मास से तीन स्तनों का दूध बछड़े को देना चाहिए और एक स्तन का स्वयं लेना चाहिए। तीसरे मास के आरम्भ से आधा दूध लेना और आधा बछड़े को तब तक देते रहना चाहिए जब तक गाय दूध देती है। सभा जब किसी को स्वरक्षित पशु देवें, तब यह व्यवस्था कर ले कि जब वह पशु असमर्थ हो जायेगा, उसके काम का न रहेगा, तब वह पुनः उसे सभा के अधीन कर देगा।

स्वामी दयानन्द का अभिप्राय था कि गाय–बैलों की रक्षा होगी तो घी–दूध, अन्न प्रचुर मात्रा में मिलेगा, कृषि उन्नत होगी, देशवासी बलवान् तथा बुद्धिमान बनेंगे और इस प्रकार प्रत्येक देश के समुन्नत होने पर यह धरती गरिमामयी बन सकेगी।

ग्रन्थ को समाप्त करते हुए महर्षि ने एक बड़ा ही मार्मिक श्लोक लिखा है–

धेनुः परा दया पूर्वा यस्यानन्दाद् विराजते।
आख्यायां निर्मितस्तेन ग्रन्थो गोकरुणानिधिः।।

अर्थात् जिसके नाम में आनन्द शब्द के बाद 'धेनु' विराजमान है और आनन्द शब्द से पूर्व 'दया' है, उस 'दयानन्द सरस्वती' ने यह गोकरुणानिधि नामक ग्रन्थ निर्मित किया है। सरस्वती के अनेक अर्थों में एक अर्थ धेनु (गाय) भी होता है, इस दृष्टि से आनन्द शब्द के बाद धेनु का होना लिखा है। इससे यह सूचित होता है कि मेरे नाम का ही यह अर्थ है कि 'धेनुओं पर करुणा करके आनन्द मानने वाला' अतः मेरा 'गोकरुणानिधि' ग्रन्थ लिखना स्वाभाविक ही है। गो–रक्षा और पशु–रक्षा का प्रश्न जैसा महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय था, वैसा ही आज भी है और उनके द्वारा किये गये गौ आदि पशुओं की रक्षा के प्रयास आज हमें भी अपने कर्तव्य का बोध करा रहे हैं।

पुरुषार्थ कीजिये!

–आचार्य मनुदेव वाग्मी

मनुष्य संसार में सबसे अधिक गुण, समृद्धियाँ, शक्तियाँ लेकर अवतरित हुआ है। शारीरिक दृष्टि से हीन होने पर भी परमेश्वर ने उसके मस्तिष्क में ऐसी–ऐसी गुप्त आश्चर्य जनक शक्तियाँ प्रदान की है, जिनके बल से वह हिंसक पशुओं पर भी राज्य करता है, दुष्कर कृत्यों से भयभीत नहीं होता, आपदा और कठिनाई में भी वेग से आगे बढ़ता है। मनुष्य का पुरुषार्थ उसके प्रत्येक अंग में कूट–कूट कर भरा गया है मनुष्य की सामर्थ्य ऐसी हैं कि वह अकेला समय के प्रवाह और गति को मोड़ सकता है। धन, दौलत, मान, ऐश्वर्य सब पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त हो सकता है। अपने गुप्त मन से पुरुषार्थ का गुप्त सामर्थ्य निकालिए। वह आपके मस्तिष्क में है। जब तक आप विचारपूर्वक इस अन्तः स्थित वृत्तियों को बाहर नहीं निकालते तब तक आप भेड़–बकरी बने रहेंगे।

संसार के चमत्कार कहाँ से प्रकट हुए? संसार के बाहर से नहीं आए और ब्रह्मशक्ति आकर उन्हें प्रस्तुत नहीं कर गयी है। उनका जन्म मनुष्य के भीतर से हुआ था। संसार की सभी शक्तियाँ, सभी गुण, सभी तत्व, सभी चमत्कार मनुष्य के मस्तिष्क में से निकले हैं। उद्गम स्थान हमारा अन्तः करण ही है संसार में छोटे मोटे लोगों के तुम क्यों गुलाम बनते हो? क्यों मिमियाते, झींकते या बड़बड़ाते हो? दुःख, चिन्ता और क्लेशो से क्यों विचलित हो उठते हो? नहीं, मनुष्य के लिए इन सबसे घबरानें की कोई आवश्यकता नहीं। वह तो अचल, दृढ़, शक्तिशाली और महाप्रतापी हैं।

इसी क्षण से अपना दृष्टिकोण बदल दीजिए। अपने–आपकों महाप्रतापी, पुरुषार्थी पुरुष मानना शुरू कर दीजिए। तत्पर हो जाइये। सावधानी से अपनी कमजोरी और कायरता छोड़ दीजिए। बल और शक्ति के विचारों से आपका सुषुप्त अंश जाग्रत हो उठेगा। सामर्थ्य और शक्ति आपके अंदर हैं। स्थायी और निर्विकार हैं। फिर किस वस्तु के अभाव को महसूस करते है? किस शक्ति को बाहर ढूंढ़ते फिरते हैं? किसका सहारा ताकते हैं? अपनी ही शक्ति से आपका उठाना और उन्नति करनी है। उसी से प्रभावशाली व्यक्तित्व बनाना हैं। आपको किसी भी बाहरी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आपके पास परुषार्थ का बड़ा खजाना हैं। उसे खोलकर काम में लाइए। मनुष्य को संसार में महत्ता प्रदान करने वाला पुरुषार्थ ही हैं। उसी की मात्रा से एक साधारण तथा महान व्यक्तियों में अन्तर हैं। पुरुषार्थ की वृद्धि पर ही मनुष्य की उन्नति निर्भर हैं। सामर्थ्य सम्पन्न मनुष्य ही सुख, सम्पत्ति, यश, कीर्ति एवं शान्ति प्राप्त कर सकता है पुरुषार्थ का निर्माण कई मानसिक तत्वों के सम्मिश्रण से होता हैं।

१. साहस– इन सबमें मुख्य हैं। नए कार्यों में तथा कठिनाइयों के समय हमें कोई भी बाह्य शक्ति आश्रय प्रदान नहीं कर सकती है। साहसी वह कार्य कर दिखाता हैं जिसे बलवान् भी नहीं कर पाते। साहस का संबंध मनुष्य के अन्तः स्थित निर्भयता की भावना से है। उसी से साहस कि वृद्धि होती है।

२. दृढ़ता– दूसरा तत्व है जो पुरुषार्थ प्रदान करता है। दृढ़ व्यक्ति अपने कार्यों में खरा और पूरा होता है। वह एकाग्र होकर अपने कर्तव्यों पर डटा रहता है।

३. महानता की महत्वकांक्षा पुरुषार्थी को नवीन उत्तरदायित्व– जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने के निमन्त्रण देती हैं और मुसीबत में धैर्य एवं आश्वासन प्रदान करती हैं। स्वेट मार्डन साहब के अनुसार बड़प्पन की भावना रखने से हमारी आत्मा की सर्वोत्तकृष्ट शक्तियों का विकास होता हैं, वे जाग्रत हो जाती हैं। इस गुण के बल पर पुरुषार्थी जिस दिशा में बढ़ता है, उसी में ख्याति प्राप्त करता चलता है। वह अपने महत्व को समझता है और अपनी सभी शक्तियों के द्वारा सदा आत्म महत्व को बढ़ाता रहता है।

धीमन्तो वन्द्यचरिता मन्यन्ते पौरुषं महत्।
आशक्ताः पौरुषं कर्तुं क्लीबा दैवमुपासते।।

अर्थात् :– 'वन्दनीय चरित्रवाले बुद्धिमान जन पुरुषार्थ को प्रधान मानते हैं और जो नपुंसक एवं पुरुषार्थ हीन जन हैं, वे भाग्य की उपासना करते हैं।' और भी कहते हैं–

उद्यमेह हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

अर्थात्– उद्यत अथवा पुरुषार्थ से सम्पूर्ण कार्य सफल होते हैं मनोरथ से नहीं क्योंकि सोते हुए सिंह के मुख मृग प्रवेश नहि करते। इससे सिद्ध होता हैं कि पुरुषार्थ श्रेष्ठ है।

डा. भारतीय जी का लेखन

1. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ– ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य, महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय, आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा, महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द और ईसाई मत।

2. वेद विषयक ग्रन्थ–वेदों में क्या है?, वेदाध्ययन के सोपान, उपनिषदों की कथाएं भाग–१ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद परिचय, वेदों की अध्यात्मधारा, वैदिक कथाओं का सच, उपनिषदों की आध्यात्म धारा, ऋग्वेद–सामवेद एवं अथर्ववेद अध्यात्म शतक।

3. ऋषि दयानन्द का राष्ट्रवाद– ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन, महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि, महर्षि दयानन्द प्रशस्ति, ऋषि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण, स्वामी दयानन्द के दार्शनिद सिद्धान्त, दयानन्द साहित्य सर्वस्व, महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य, मैंने ऋषि दयानन्द को देखा, ऋषि दयानन्द की खरी–खरी बातें, ऋषि दयानन्द के चार लघु चरित, दयानन्द चित्रावली (अंग्रेजी), ***Swami dayanand saraswati his life and ideas shiv nandan kulyar.***

4. महापुरुषों के जीवनचरित–श्री कृष्ण चरित, पंडित गणपति शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, महात्मा कालूराम जी, कुंवर चांद करण शारदा, नवजागरण के पुरोधा–स्वामी दयानन्द, पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा, ऋषि दयानन्द के भक्त प्रशंसक और सत्संगी, श्रद्धानन्द जीवन कथा, राजस्थान के आर्य महापुरुष।

5. आर्य समाज विषयक ग्रन्थ–आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान, परोपकारिणी सभा का इतिहास, आर्य सामज का अतीत और वर्तमान, आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार, आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय, आर्यसमाज का इतिहास, पांच खण्ड का विवेचन, आर्यसमाज के बीस बलिदानी।

6. स्वामी दयानन्द के ग्रंथों का संपादन– चतुर्वेद विषय सूची, ऋग्वेद के प्रारंभिक २२ मन्त्रों का भाष्य, दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह, दयानन्द उवाच, महर्षि दयानन्द की आत्मकथा, उपदेश मंजरी, पंडित लेखराम रचित स्वामी दयानन्द का जीवन चरित।

7. अन्य ग्रन्थ–बालकों की धर्म शिक्षा, पंडित रूद्र दत्त शर्मा ग्रंथावली भाग १, शुद्ध गीता, दयानन्द दिग्विजयार्क, कविरत्न प्रकाशचन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ, पंडित महेन्द्र प्रताप शास्त्री अभिनन्द ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्द ग्रन्थ, श्रद्धानन्द ग्रंथावली ६ भाग, ऋषि दयानन्द प्रशस्ति, श्री दयानन्द चरित।

8. विभिन्न ग्रन्थ–विद्यार्थी जीवन का रहस्य, ब्रह्मवैवर्त पुराण की आलोनचा, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी व्याख्यान माला, आर्य लेखक कोष–१२०० आर्यविद्वानों का लेखन परिचय,

9. सत्यार्थ प्रकाश विषयक ग्रन्थ– ज्ञानदर्शन –एकादश समुल्लास की व्याख्या, विश्व धर्मकोष–सत्यार्थ प्रकाश, हिन्दू धर्म की निर्बलता।

10. अनूदित ग्रन्थ–श्रीमद्भागवत (गुजराति), मीमांसा दर्शन (गुजाराति), आर्यसमाज लाला लाजपत राय (अंग्रेजी), श्रद्धानन्द ग्रन्थावली, कांग्रेस एण्ड आर्यसमाज एण्ड इट्स डेट्रेक्टर्स, पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय कृत का हिन्दी अनुवाद, सूरज बुझाने पाप (गुजराति)।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में १००० के करीब शोधपूर्ण लेख भी शामिल हैं। डॉ० भारतीय जी की साहित्य साधना करीब एक लाख पृष्ठों से अधिक हैं और ५० से अधिक वर्षों का साधना और तप का परिणाम है। इस अवसर पर मैं केन्द्रीय मंत्री डा० सत्यपाल सिंह जी से डॉ० भारतीय जी की स्मृति में देश के शीर्ष विश्वविद्यालय में उनकी स्मृति में चेयर स्थापित करने की विनती करता हूँ। इस चेयर से उनके द्वारा लिखित सकल साहित्य को न केवल सुरक्षित किया जाये अपितु उस पर शोधार्थी शोध भी करे।

प्रेरक प्रसंग

–प्रस्तुति हरीश कुमार शास्त्री

एक माली ने बहुत सुंदर बाग लगाया। एक युवक सुन्दर कपड़े पहने हुए माली से बाग देखने की इच्छा प्रकट करता हैं। माली एक शर्त पर की आप कोई भी फल–फूल नहीं तोड़ेंगे बाग में जाने कि आज्ञा दे देता हैं। वह युवक बाग में घूमते हुए फल–फूल आदि देखकर मोहित हो जाता है। उसके मन में विचार आता है कि अगर मैं कुछ फूल तोड़ कर अपनी जेब में छुपा लूँ तो किसी को पता नहीं चलेगा। उस युवक ने कुछ फल–फूल तोड़ कर अपनी जेब में छिपा लिये। जब वह बाहर निकलने लगा तो माली ने नियम अनुसार उसकी जेब तलाशी। माली ने उस युवक को अपराध में पुलिस के हवाले कर दिया। चोरी के दंड में उसे जेल भेज दिया गया।

यह जो माली है ईश्वर है जिन्होंने सृष्टि रूपी यह सुन्दर बाग लगाया है। ईश्वर ने आत्मा को मनुष्य रूप धारण कर घूमने अर्थात् कर्म करने की स्वतंत्रता दी है। मनुष्य नियम का पालन करने के स्थान पर भोग रूपी कर्म करता है। इसके अपराध में ईश्वर उसे अगले जन्म रूपी बाग में कर्म करने के लिये भेज देता हैं।

यही त्रैतवाद का अटल सत्य सिद्धांत है। ईश्वर मनुष्य को मोक्ष रूपी सुख देने के लिये सृष्टि का निर्माण करता है एवं कर्म की स्वतंत्रता का अधिकार देता हैं। यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के प्रथम मंत्र में सन्देश दिया गया हैं–

ईशावास्यमिदम् सर्वं यत्किच जगत्यां जगत।
तेनत्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम।।

ईश्वर सदा सब को देख रहा है, यह जगत ईश्वर से व्याप्त है और ईश्वर सब स्थान पर विद्यमान है। संसार के सभी पदार्थों को त्याग की भावना से भोग कर। धर्मात्मा होकर इस लोक के सुख और परलोक के मोक्ष की अभिलाषा कर।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य कन्या पाठशाला इण्टर कालेज में आर्य समाज अहाता ओलिया मुजफ्फर नगर एवं स्त्री आर्य समाज अहाता ओलिया का ऋग्वेद पारायण यज्ञ ६, १० एवं ११ अगस्त २०१६ को सुलभा आर्या के ब्रह्मत्व में गुरूकुल नजीबाबाद की कन्याओं द्वारा वेद पाठ किया गया। सुकृति आर्य एवं हरिश्चन्द्र आर्य द्वारा भजनोपदेश किया गया। कार्यक्रम में अरविन्द्र कुमार कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, ने कहा कि आज स्त्री जाति की उन्नति में स्वामी दयानन्द का योगदान नहीं भुलाया जा सकता कार्यक्रम को सफल बनाने में समाज के मन्त्री अरूण कुमार, मंत्राणी स्त्री आर्य समाज कृष्णा प्रजापति एवं प्रधानाचार्य, शिक्षिकाओं एवं बालिकाओं का पूर्ण योगदान रहा। समाज में सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा।

इस अवसर पर सतीश चन्द्र शर्मा, राजकुमार राज, अनिल सक्सेना, डा० खेमचन्द्र धीमान, श्रीमती मीनू शर्मा, श्रीमती कुसुम रानी, श्रीमती रीता शर्मा आदि उपस्थित रहे।

आर्य समाज बगहां चुनार मीरजापुर में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज बगहां चुनार मीरजापुर के वेद प्रचार पर १७ अगस्त को श्री विपिन आर्य के यहां वृहद यज्ञ के साथ कार्यवाही शुरू हुई।

यज्ञ के पुरोहित श्री अमरनाथ सिंह व श्री विपिन आर्य, तथा यजमान श्री अभिलाष सिंह थे। सैकड़ों स्त्री पुरुषों के आहुति देने के बाद यज्ञ समाप्त हुआ। इसके बाद श्री सरोज कुमार सिंह, जिला जीत सिंह, श्री हंशलाल सिंह व श्री बेचन सिंह, श्री अमरनाथ सिंह का भजन व उपदेश हुआ। शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरण हुआ श्री विपिन आर्य ने सबको धन्यवाद दिया।

—बेचन सिंह, संरक्षक आर्य समाज बगहां

वेद प्रचार सप्ताह धूम से मनाया गया

१ माह तक वेद प्रचार सप्ताह मीरजापुर जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में निम्नलिखित ग्रामों में आर्य समाजों की ओर से धूम–धाम से मनाया गया। जिसमें यज्ञ, भजन व उपदेशक मुख्य कार्यक्रम हुआ ग्राम के अधिक से अधिक लोगों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ता व गायक थे श्री राम आधार शास्त्री, नागेन्द्र सिंह, डॉ. झग्गड़ सिंह, अमरनाथ सिंह द्वय, श्री बेचन सिंह–संरक्षक, आद्या प्रसाद सिंह, प्रधान, राजकुमार सिंह, सत्यपाल सिंह, रामधनी सिंह, सरोज कुमार सिंह, जयसिंह, वासुदेव सिंह श्री जीवन सिंह, रामजतन सिंह आदि।

२. आर्य समाजों में प्रमुख थी–आर्य समाज बगहा मीरजापुर, बगही, जलालपुर, नकहरा, कैलहटबाजार कैलहट ग्राम, भवानी पुर कदवां, नियामतपुर, पचेवरा, रसूलपुर, गौरही, रजौली, पटीहटा, पचरावरामगढ़, हडोमनपुर, पाहों आदि। वृक्षारोपड़ का कार्यक्रम हुआ।

३. १५ अगस्त को आर्य समाज मन्दिर बगहा व बसरदार पटेल मुख्य गेट पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। श्री बेचन सिंह ने जयघोष व उद्बोधन किया। महिलायें स्वेक्षा से आहुती देती व भजन आदि सुनाती थी।

—बेचन सिंह, संरक्षक

Yahi To Hai Zindagi

पिता

माँ के हैं श्रृंगार पिता।
बच्चों के संसार पिता।।
माँ आँगन की तुलसी है।
द्वारे बंदनवार पिता।।
घर की नीव सरीखी माँ।
घर की छत-दीवार पिता।।
माँ कर्त्तव्य बताती है।
देते है अधिकार पिता।।
बच्चों की पालक है माँ।
घर के पालनहार पिता।।
माँ सपने बुनती रहती।
करते है साकार पिता।।
बच्चों की हर बाधा से।
लड़ने को तैयार पिता।।
आज विदा करके बेटी।
रोये पहली बार पिता।।
बच्चे खुशियाँ पायें तो।
कर दें जान निसार पिता।।
घर को जोड़े रखने में।
टूटे कितनी बार पिता।।
घर का भार उठाते थे।
अब हैं घर के भार पिता।।
बँटवारे ने बाँट दिये-
बूढ़ी माँ-लाचार पिता।।

भजन संध्या एवं योग सम्मेलन धूमधाम से संपन्न

नई दिल्ली, अध्यात्म पथ (पंजी) मासिक पत्रिका द्वारा देश धर्म पर बलिदान देने वाले वीरों की याद में राष्ट्र कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज पश्चिम विहार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भारतभूषण साहनी ने की तथा मुख्य अतिथि वेस्ट जोन के चेयरमैन की कैलाश सांकला थे। समारोह का आयोजन वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री के सानिध्य में हुआ। इस अवसर पर अध्यात्म पथ पत्रिका का लोकार्पण खचाखच भरे सभागार में गणमान्य लोगों की उपस्थिति में हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने वीर शहीदों के अभूतपूर्व त्याग बलिदान को याद किया तथा उनके जीवन से देशभक्ति की भावना के अनुकरण एवं अध्यात्म पथ पर चलने की प्रेरणा दी। भजन सम्राट श्री नरेन्द्र आर्य सुमन के भजनों एवं श्री विनय शुक्ल विनम्र की कविताओं ने सबका मन मोह लिया।

अतिथि संपादक श्री सुरिन्द्र चौधरी एवं प्रबंध संपादक श्री अश्विनी नांगिया ने सभी अभ्यागतों का हार्दिक धन्यवाद किया। अन्त में अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता स्वामी धर्ममुनि जी ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। भव्य ऋषिलंगर के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

—अश्विनी नांगिया, प्रबन्ध संपादक

समय बड़ा बलवान

स्वर एवं रचना –
सत्यपाल पथिक (वैदिक भजनोपदेशक)

जगत में समय बड़ा बलवान „
सबके सर पर राज करे
हो निर्धन या धनवान
जगत में समय बड़ा बलवान
पल में राज पलट जाते हैं
तख़्तो ताज उलट जाते हैं „
घटने वाले बढ़ जाते हैं
बढ़ने वाले घट जाते हैं
पल में क्या से क्या हो जाए
हर कोई हैरान
जगत में समय बड़ा बलवान „
कल था मस्त जो रंग रलियों में
रंग महल फूलों कलियों में „
आज उसी को हमने देखा
भीख मांगते इन गलियों में
समय की उंगली पर दुनिया में
नाचे हर इनसान
जगत में समय बड़ा बलवान „
इक समय खुशियां लाता है
मानव गाता मुसकाता है „
ऐसा दिन भी आता है जब
दिल का बाग उजड़ जाता है
पल में आँसू बन बहती है
चेहरे की मुसकान
जगत में समय बड़ा बलवान „
'पथिक' दुख में फंसते देखा
बीच भंवर के धंसते देखा „
उठी पलक को लहरों पर ही
खिलखिलाते हंसते देखा
और उठाकर खुद साहिल पे
छोड़ गया तूफान
जगत में समय बड़ा बलवान „

- मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूँ जिस पर ''यज्ञ में घी बहाने'' के आरोप लगाए जाते हैं ! ''खून बहाने'' के नहीं।
- मुझे गर्व है की मैं उस धर्म से हूँ जहाँ पशु की गर्दन पर ''हाथ फेरना'' सिखाते हैं ''छुरी फेरना'' नहीं।
- मुझे गर्व है कि मैं उस धर्म से हूँ जिसके त्यौहार यज्ञ करके व खीर हलवा खिलाकर मनाए जाते हैं। खून व हड्डियाँ फेंककर, माँस खिलाकर एवम् खाकर नहीं।
- मुझे गर्व है कि मैं ''आर्य'' हूँ। मुझे गर्व है कि मैं योगीराज राम, कृष्ण व दयानंद का भक्त हूँ। मुझे गर्व है कि मैं सत्य सनातन वैदिक धर्म का अनुयायी हूँ।

निमन्त्रण

ओ३म्
निमन्त्रण-पत्र

आर्य समाज मॉडल टाउन, हिसार

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

वार्षिकोत्सव
दिनांक 11 से 15 सितम्बर 2019
का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है।

निमन्त्रित विद्वान
प्रवक्ता :- आचार्य सोमदेव शास्त्री, मुम्बई (महाराष्ट्र)
भजनोपदेशक :- पं. नरेश दत्त आर्य, बिजनौर (उ.प्र.)

यज्ञ ब्रह्मा एवं मंच संचालक – आचार्य सुदेव वेदांशु
इस शुभ अवसर पर आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

गंगादत्त अहलावत, पूर्व डी.एस.पी., संरक्षक | जगदीश प्रसाद आर्य (सूरेरा वाले) प्रधान | वीरेन्द्र कुमार आर्य उप-प्रधान | ओम सिंह लाम्बा (लाडवा वाले) उप-प्रधान | पवन रावलवासिया मंत्री

एवम् समस्त सदस्यगण, प्रबंधकर्त्री सभा आर्य समाज, मॉडल टाउन, हिसार

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०९८३७४०२१९२, व्यवस्थापक-
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasapt...com

सेवा में,
....
....

आर्य प्रतिनिधि सभा आ. प्र. — तेलंगाना द्वारा प्रकाशित
सत्यार्थ प्रकाश के तेलगु संस्करण का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

समारोह में माता निर्मला भारती जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी गुरूकुल पूठ उ.प्र., आचार्य आनन्द प्रकाश जी, आचार्य उदयन जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, आचार्य भवभूति जी, आचार्य नीरजा जी, आचार्य सुब्बाराव जी, पं. चलवादि सोमय्या जी, श्रीमती अमृता कुमारी जी व प्रसिद्ध उद्योगपति डॉ० दयानन्द गौरी जी, श्रीमती मीरा गौरी जी, डॉ० वसुधा शास्त्री, श्री रामचन्द्रा रेड्डी जी आदि उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री भण्डारू दत्तात्रेय जी के सानिन्ध्य में लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ

आर्य समाज बगहा मिर्जापुर में वेद प्रचार सप्ताह पर श्री बेचन सिंह आर्य एवं विपिन कुमार आर्य यज्ञ कराते हुए

आर्य कन्या इण्टर कालेज आर्य समाज अहाता ओलिया मुजफ्फर नगर में ऋग्वेद पारायण यज्ञ में भाग लेते हुए सभा कोषाध्यक्ष अरविन्द कुमार जी एवं अरूण कुमार आर्य जी

आर्य समाज ललितपुर के वेद प्रचार महोत्सव पर श्री लाखन सिंह आर्य जी के साथ आचार्य सुदेश जी एवं उदबोधन करते हुए जिलाधिकारी श्री मानवेन्द्र सिंह जी

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक-मुद्रक -प्रकाशक-श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।